

न्यायालय अति० संभागीय आयुक्त कोटा संभाग कोटा

(निर्णय बर्डजलास प्रियंका गोस्वामी आर०ए०एस० अति० संभागीय आयुक्त कोटा द्वारा आध्यासित)

- (1) प्रकरण संख्या: 54/2018/अपील/एल.आर.एक्ट/बूंदी
दायरा दिनांक: 7.6.2018
अन्तर्गत धारा: 76 राज० भू राजस्व अधिनियम 1956

उनवान

काली बाई उर्फ संतोष पुत्री मोतीलाल पत्नी बृजमोहन जाति मेघवाल निवासी ग्राम बालापुरा हाल निवासी संजय कॉलोनी नैनवा रोड बूंदी तहसील व जिला बूंदी।

...अपीलार्थी

बनाम

1. मुकेश आत्मज गोपाल जाति मेघवाल निवासी ग्राम बालापुरा थाना काप्रेन तहसील के० पाटन बूंदी (राज०)।
2. सरकार जरिये तहसीलदार के० पाटन जिला बूंदी।
3. राज० सरकार जरिये उप पंजीयक के० पाटन जिला बूंदी (राज०)।

...रेस्पोंडेन्ट

- (2) प्रकरण संख्या: 55/2018/अपील/एल.आर.एक्ट/बूंदी
दायरा दिनांक: 7.6.2018
अन्तर्गत धारा: 76 राज० भू राजस्व अधिनियम 1956

उनवान

काली बाई उर्फ संतोष पुत्री मोतीलाल पत्नी बृजमोहन जाति मेघवाल निवासी ग्राम बालापुरा हाल निवासी संजय कॉलोनी नैनवा रोड बूंदी तहसील व जिला बूंदी।

...अपीलार्थी

बनाम

1. मुकेश आत्मज गोपाल जाति मेघवाल निवासी ग्राम बालापुरा थाना काप्रेन तहसील के० पाटन बूंदी (राज०)।
2. सरकार जरिये तहसीलदार के० पाटन जिला बूंदी।
3. राज० सरकार जरिये उप पंजीयक के० पाटन जिला बूंदी (राज०)।

...रेस्पोंडेन्ट

उपस्थित : श्री अशोक गुप्ता अभिभाषक अपीलार्थी
श्री शंभूलाल मेघवाल अभिभाषक रेस्पोंडेंट क्रम-1

::निर्णय::


दिनांक 26.12.2018

- 1 उक्त दोनो अपीलों के पक्षकार एवं विवादित भूमि समान होने से इनका निर्णय एक साथ किया जा रहा है। अपीलार्थी द्वारा प्रथम अपील तहसीलदार के० पाटन द्वारा पारित नामा० सं० 173 दिनांक 21.7.05 ग्राम बालापुरा खातेदार मोतीलाल के फोट होने पर मुकेश कुमार एवं काली बाई के नाम तस्दीक किये जाने तथा द्वितीय अपील नामा० सं० 249 दिनांक 10.3.2009 ग्राम बालापुरा रिलीज डीड के आधार पर मुकेश कुमार के नाम तस्दीक कर दिये

श्री. अ. गुप्ता
अभिभाषक

जाने से अप्रसन्न होकर से प्रथम अपील राज0 भू राजस्व अधिनियम की धारा 75 अन्तर्गत न्यायालय अतिरिक्त जिला कलक्टर (सीलिंग) बूंदी के यहां पेश कर उक्त दौनो नामान्तरकरण निरस्त करने का अनुरोध किया गया। प्रथम अपीलीय न्यायालय ने उक्त दोनो नामा0 के संबध में राजस्व अभिलेख में लाल स्याही से विवादित का नोट अंकित किये जाने तथा सिविल न्यायालय के निर्णय के उपरांत वारिसान के संबध में समुचित जांच करते हुये नये सिरे से आदेश पारित करने का दिनांक 28.2.2018 को निर्णय पारित किया, जिससे व्यथित होकर अपीलार्थी द्वारा उक्त दोनो अपील सं0 54/18 व 55/18 राज0 भू राजस्व अधिनियम की धारा 76 के अन्तर्गत न्यायालय हाजा में पेश की गई। प्रस्तुत उक्त दौनो अपीलों का सारांश इस प्रकार है कि भूमि खसरा नम्बर 242 रकबा 0.10 है0, खसरा नं0 243 रकबा 002 है0 ख0 नं0 246 रकबा 0.15 है0, ख0 नं0 257 रकबा 0.90 है0 कुल किता 4 रकबा 1.17 है0 ग्राम बालापुरा के खातेदार अपीलांट के पिता मोतीलाल थे मोतीलाल के कोई पुत्र संतान नहीं थी अपीलांट एकमात्र उनकी वारिस है भूमि को काका गोपाल को जुपाकर आती थी क्योंकि अपीलांट अपने पति के साथ बूंदी में निवास करती है। अपीलांट के पिता की मृत्यु के बाद नामा0 सं0 173 तस्दीक किया गया जिसमें अपीलांट कालीबाई के साथ 1/2 हिस्से में मुकेश का नाम भी अंकित कर दिया जबकि मुकेश मोतीलाल का पुत्र नहीं है अपितु मुकेश के पिता का नाम गोपाल है। मुकेश व उसके पिता गोपाल अपीलांट की भूमि को हडप करना चाहते हैं। इसी नियत से नामा0 दर्ज करवाया है इसके बाद भी रेस्प0 क्रम-1 व उसके परिवारजनों ने मिलकर धोखधडी करते हुये एक रिलीजडीड दिनांक 20.2.09 को निष्पादित करवाया है जिसमें कालीबाई के स्थान पर उसकी सगी बहिन तस्वीर को उसके स्थान पर उप पंजीयक के0 पाटन के यंहा प्रस्तुत किया गया। इस रिलीज डीड के आधार पर अपीलांट का आधा हिस्सा भी रेस्प0 क्रम-1 ने अपने नाम दर्ज करवा लिया जबकि अपीलांट द्वारा ऐसा कोई दस्तावेज निष्पादित नहीं किया है इस बावत धारा 420 आईपीसी का प्रकरण दर्ज है जिसमें रेस्प0 जेल में रहकर आये है। रिलीज डीड सही नहीं होने की स्थिति में नामा0 स्वतः ही प्रभावशून्य हो जाता है। तस्वीर अंगूठा करती है जबकि कालीबाई हस्ताक्षर करती है। रिलीजडीड के आधार पर खातेदारी अधिकार हस्तान्तरित नहीं होते हैं। अधीनस्थ न्यायालय ने प्रकरण में उक्त तथ्यों का समुचित परीक्षण नहीं किया। अतः अधीनस्थ न्यायालय का निर्णय दिनांक 28.2.2018 विधि के प्रावधानों के विपरीत व न्याय के सर्वमान्य सिद्धांतों के विपरीत होने से निरस्तनीय है। नामा0 सं0 249 के विरुद्ध प्रस्तुत अपील सं0 40/16 में सम्पूर्ण तथ्यों का अवलोकन करने के बाद माना है कि उक्त रिलीज डीड सही है अथवा फर्जी लेकिन अधीनस्थ न्यायालय में उक्त अपील में अपीलांट के द्वारा जो दस्तावेज फौजदारी प्रकरण से संबधित एवं रिलीज डीड की प्रति प्रस्तुत की है जिससे पूर्ण रूप से प्रमाणित है कि उक्त रिलीजडीड कालीबाई उर्फ संतोष के द्वारा मुकेश के हक में नहीं करायी गई इसके बावजूद भी उक्त नामान्तरकरण सं0 249 को निरस्त करने का निर्णय पारित नहीं किया बल्कि नामा0 के राजस्व अभिलेख पर लाल स्याही से विवादित का नोट अंकित करने का आदेश पारित कर त्रुटि की है। अधीनस्थ न्यायालय ने इस तथ्य पर भी गौर नहीं किया कि रा0 काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 41 व 63 के अनुसार कानूनन रिलीजडीड के आधार पर हक व अधिकारों का व खातेदारी अधिकारों का हस्तान्तरण नहीं होता है इस कारण रिलीजडीड के आधार पर खोला गया नामा0 निरस्त किये जाने योग्य है। जेरअपील निर्णय की जानकारी अपीलांट के अभिभाषक द्वारा बताने पर दिनांक 19.4.18 को नकल हेतु आवेदन किया गया उक्त निर्णय की नकल दिनांक 24.4.18 को प्राप्त होने पर अपील पेश की गई। अतः अपील अपीलांट स्वीकार की जाकर अधीनस्थ न्यायालय के निर्णय दिनांक 28.2.2018 एवं दोनो नामान्तरकरण निरस्त किये जाने का आदेश पारित करने की इस्तदुआ की गई।

- 2 अपील दर्ज रजिस्टर की जाकर रेस्प0 को जरिये सम्मन आहूत किया गया। अधीनस्थ न्यायालय का अभिलेख प्राप्त होने पर प्रकरण में दिनांक 29.11.2018 को बहस विद्वान अभिभाषक, अपीलांट एक पक्षीय सुनी गई। रेस्प0 क्रम-1 एवं उसके अभिभाषक बावजूद सूचना के उपस्थित नहीं हुये।
- 3 विद्वान अभिभाषक अपीलांट ने अपील में वर्णित तथ्यों को दोहराते हुये कथन किया कि उक्त वर्णित विवादित भूमि अपीलांट के पिता मोतीलाल के खातेदारी की है। मोतीलाल के कोई पुत्र संतान नहीं थी अपीलांट एकमात्र उनकी वारिस है। अपीलांट के पिता की मृत्यु के बाद मुकेश ने स्वयं को मोतीलाल जी का दत्तक पुत्र बताकर विवादित आराजी का नामा0 सं0 173 हिस्सा 1/2, 1/2 का तस्दीक करवा लिया। जबकि मुकेश मोतीलाल का पुत्र नहीं है अपितु मुकेश के पिता का नाम गोपाल है। बहस में आगे बताया कि रेस्प0 क्रम-1 ने कालीबाई के स्थान पर उसकी सगी बहिन तस्वीर को उसके स्थान पर उप पंजीयक के0 पाटन के यंहा खडा कर रिलीज डीड निष्पादित करवा कर इस रिलीज डीड के आधार पर अपीलांट का आधा हिस्सा भी रेस्प0 क्रम-1 ने अपने नाम दर्ज करवा कर नामा0 सं0 249 तस्दीक करवा लिया। अधीनस्थ न्यायालय ने अपने निर्णय में मुकेश को गोदपुत्र माना है जबकि


 दि. २० मार्च ०१८
 जे.

पत्रावली में गोदनामा नहीं है केवल राशन कार्ड व वोटर आई डी की प्रति है जिससे अपीलान्त का गोदपुत्र होना प्रमाणित नहीं होता है अधीनस्थ न्यायालय ने उक्त तथ्यों को नजरअंदाज कर जेरअपील आदेश पारित कर प्रकरण रिमांड कर विवादित का नोट अंकित करने का जेरअपील आदेश पारित कर त्रुटि की है। जेरअपील आदेश निरस्त किये जाने योग्य है। रिलीजडीड केन्सीलेशन का सक्षम न्यायालय में दावा किया हुआ है। गोदनामा हो तो भी गोद लिया जाना प्रमाणित होना चाहिये आरआरटी 2018 एच.सी. पेज 640 न्यायिक उद्धरण पेश कर निवेदन किया कि दौनो नामा० निरस्त किये जावे क्योंकि प्रथम इंतकाल सं० 173 ही निरस्त होने योग्य है तो उसके बाद रिलीज डीड के आधार पर तस्दीक किया गया नामा० सं० 249 सही नहीं है। अंत में अपील स्वीकार करने का अनुरोध किया।

4 रेस्पो० क्रम-1 एवं उसके अभिभाषक उपस्थित नहीं हुये।

5 हमने अपील एवं अधीनस्थ न्यायालय की पत्रावली में उपलब्ध आधार अभिलेख/दस्तावेजात का आध्योपांत अवलोकन विद्वान अभिभाषक अपीलान्त द्वारा प्रस्तुत न्यायिक नजीर पर गौर कर बहस विद्वान अभिभाषक, अपीलान्त एक पक्षीय पर मनन किया। अपीलान्त द्वारा प्रस्तुत अपील मियाद बाहर है डिले कन्डोन हेतु परिसीमा अधिनियम की धारा 5 अन्तर्गत प्रार्थना पत्र एवं प्रार्थना पत्र में वर्णित तथ्यों के समर्थन में स्वयं का शपथ पत्र पेश किया गया। प्रार्थना पत्र एवं शपथ पत्र का रेस्पो० द्वारा खण्डन नहीं किया है। रेस्पो० क्रम-1 एवं उसके अभिभाषक ने प्रकरण उपस्थित होकर अपना पक्ष भी प्रस्तुत नहीं किया है ऐसी स्थिति में शपथ पत्र में वर्णित तथ्यों को अविश्वसनीय माने जाने का प्रकरण में कोई आधार नहीं है लिहाजा न्यायहित में अपील पेश करने में हुई देरी सद्भाविक होने से क्षम्य की जाकर अपील को अवधि मध्य माना जाता है।

6 प्रकरण का गुणावगुण के आधार पर परीक्षण किये जाने पर जाहिर होता है कि विवादित आराजी के खातेदार मोतीलाल के फौत होने उपरांत नामा० सं० 173 हिस्सा 1/2, 1/2 अपीलान्त एवं मुकेश के नाम तस्दीक किया गया तथा इसके उपरांत रिलीज डीड के आधार पर सम्पूर्ण भूमि का नामा० सं० 249 रेस्पो० क्रम 1 के पक्ष में तस्दीक किये जाने पर अपीलान्त द्वारा अपील अधीनस्थ न्यायालय में पेश कर इस आधार पर चुनोती दी गई कि मृतक खातेदार का रेस्पो० क्रम-1 मुकेश पुत्र नहीं होने से तस्दीक किया गया नामा० सं० 173 विधि विरुद्ध है तो रिलीजडीड के आधार पर तस्दीक किया नामा० सं० 249 भी सही नहीं होने से निरस्तनीय है। प्रश्नगत प्रकरण में अपीलान्त का मुख्य तर्क है कि अधीनस्थ न्यायालय ने प्रकरण में समुचित तथ्यों का परीक्षण नहीं किया तथा उक्त नामा० को निरस्त नहीं कर नामा० के संबंध में राजस्व अभिलेखों में विवादित होने का नोट लाल स्याही से से दर्ज कर त्रुटि की है। प्रथम अपीलीय न्यायालय द्वारा प्रकरण में पारित जेरअपील निर्णय दिनांक 28.2.2018 में विवेचित तथ्य एवं पत्रावली में उपलब्ध आधार अभिलेख के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि रेस्पो० मुकेश स्वयं को मोतीलाल का गोदपुत्र प्रमाणित करने में पूर्ण रूप से असफल रहने एवं भूमि के संबंध में जो रिलीजडीड निष्पादित किया गया है वह सही है अथवा फर्जी इसका परीक्षण करने हेतु अधीनस्थ न्यायालय सक्षम नहीं होने तथा कार्यवाही हेतु प्रकरण सिविल न्यायालय विचाराधीन होने से उक्त दौनो नामा० के संबंध में राजस्व अभिलेख में लाल स्याही से विवादित का नोट अंकित किये जाने तथा सिविल न्यायालय के निर्णय के उपरांत वारिसान के संबंध में समुचित जांच करते हुये नये सिरे से आदेश पारित करने हेतु प्रकरण परीक्षण न्यायालय को रिमांड किया गया है। अधीनस्थ न्यायालय का प्रश्नगत प्रकरण में विवेचित उक्त अभिमत विधिसम्मत होने से जेरअपील निर्णय में किसी प्रकार का हस्तक्षेप किया जाना उचित प्रतीत नहीं होता है। अधीनस्थ न्यायालय ने प्रकरण में तथ्यों का समुचित परीक्षण कर जेरअपील निर्णय दिनांक 28.2.2018 पारित किया है जिसमें किसी प्रकार का विधिक एवं तथ्यात्मक दोष प्रकट नहीं होता है। लिहाजा उक्त विवेचन अनुसार अपील अपीलान्त खारिज योग्य है।

7 परिणामस्वरूप उक्त विवेचन अनुसार अपील अपीलान्त खारिज की जाती है।

8 निर्णय आज दिनांक 26.12.2018 को मेरे द्वारा लिखवाया जाकर बाद हस्ताक्षर न्यायालय मुद्रा अंकित कर सरे ईजलास सुनाया गया।

(प्रियंका गोस्वामी)
अति० संभागीय आयुक्त
कोटा